

वदिशी वनिमिय व्यवस्था के तहत बैंकिंग प्रणाली में 5 अरब डॉलर डालेगा रज़िर्व बैंक

चर्चा में क्यों?

भारतीय रज़िर्व बैंक ने बैंकिंग प्रणाली में तीन साल की अवधितक वदिशी वनिमिय व्यवस्था (Foreign Exchange Swap) के तहत पाँच अरब डॉलर की नकदी डालने का फैसला किया है।

प्रमुख बिंदु

- यह स्वैप या अदला-बदली व्यवस्था रज़िर्व बैंक की ओर से वदिशी मुद्रा वनिमिय की खरीद-बिक्री के रूप में होगी।
- तरलता प्रबंधन (Liquidity Management) के लिये यह तरीका पहली बार उपयोग किया जा रहा है।
- इसके तहत बैंक की ओर से रज़िर्व बैंक को डॉलर बेचे जाएंगे और साथ ही वह स्वैप की अवधि समाप्त होने के बाद इतनी ही राशि के डॉलर की खरीद की सहमति देगा।
- नकदी के सतत प्रवाह के मद्देनज़र दीर्घावधि वदिशी वनिमिय व्यवस्था के तहत यह राशि बैंकिंग प्रणाली में डाली जाएगी।
- नकदी के प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिये रज़िर्व बैंक इसी वित्त वर्ष में यह राशि डालेगा।
- वदिशी करेंसी की अदला-बदली के माध्यम से यह प्रक्रिया 26 मार्च से शुरू होकर 28 मार्च 2022 तक चलेगी।
- इसके माध्यम से जुटाए गए डॉलर स्वैप की अवधितक रज़िर्व बैंक के वदिशी मुद्रा भंडार में प्रदर्शित होंगे और रज़िर्व बैंक की आगामी देनदारियों में भी परलिकषति होंगे।
- माना जा रहा है की इस कदम से मुक्त बाज़ार संचालन (Open Market Operations) पर निर्भरता कम होगी, जिसका कुल ऋण की राशि में एक बड़ा हिस्सा है। मुक्त बाज़ार संचालन अधिक होने से दरों पर प्रभाव पड़ता है।
- इसके लिये बाज़ार सहभागियों (Market Participants) को उस प्रीमियम के साथ बोली लगानी होगी, जो वे रज़िर्व बैंक को स्वैप की अवधि के दौरान देने के लिये तैयार हैं।
- रज़िर्व बैंक के अनुसार, नीलामी कटऑफ प्रीमियम के आधार पर बहु-मूल्य (Multiple Price) आधारित होगी।
- इस कदम से रज़िर्व बैंक के वदिशी मुद्रा भंडार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, जो 1 मार्च को समाप्त सप्ताह के दौरान 401.7 बिलियन डॉलर था।

वदिशी वनिमिय से होने वाले प्रमुख लाभ

करेंसी स्वैप के माध्यम से वदिशी मुद्रा भंडार को मज़बूती मिलती है और रज़िर्व बैंक द्वारा त्वरति तथा सही समय पर सहायता देना संभव हो जाता है।

वदिशी मुद्रा कोष को उपयुक्त स्तर पर बनाए रखने से आयात, ऋण कसित का भुगतान करने में आसानी रहती है और घरेलू मुद्रा को मज़बूती मिलने के साथ वनिमिय दर में अस्थिरता से भी बचाव होता है।

इस तरह की सुविधा से रुपए की वनिमिय दर तथा पूंजी बाजारों में भी स्थिरता बनाए रखने में मदद मिलती है।

स्रोत: द हिंदू